Vol 5, Issue 10, 2022 **Impact Factor:5.355** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2022.5.10.5815

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव ; एक ऐतिहासिक अध्ययन

षोधार्थिनी – रोषनी वेदी

षिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

डॉ0 रश्मि शुक्ला, एसोसिएट प्रोफेसर

षिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची

सारांश

भारतीय इतिहास में बुद्ध का आगमन एक क्रांतिकारी घटना है। उनका जन्म ईसा पूर्व छठी शताब्दी में हुआ था। 600 ईसा पूर्व से 400 ईसा पूर्व तक की अवधि भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि है। आज पूरी दुनिया में हर जगह हिंसा, उन्माद, निराशा, घृणा और द्वेष की बातें की जाती हैं। इसके कारण न केवल अस्थिरता बढ़ रही है, बल्कि विकास की गति भी धीमी हो रही है। यहां तक कि इंसान भविष्य पर भी सवाल उठा रहे हैं। आज हम भयानक क्षणों में जी रहे हैं और मनुष्य, मनुष्य का दुश्मन बन रहा है। यदि हम इन चुनौतियों पर ध्यान देते हैं, और इसके निवारण के लिए प्राचीन परंपराओं और विचारों को देखते हैं, तो भगवान बुद्ध के विचार हमारे सामने एक रत्न की तरह दिखाई देते हैं, जिनकी प्रकाश किरणें हमारे भ्रम के अंधेरे को दूर कर सकती हैं। भगवान बुद्ध की कई प्रथायें, विचार और ज्ञान मानव कल्याण के लिए मील के पत्थर साबित हुए हैं। भगवान बुद्ध ने कहा है कि घृणा कभी समाप्त नहीं होती है बल्कि केवल प्रेम घृणा को समाप्त कर देता है। एक समाधान खोजने के लिए, यदि हम अपने पारंपरिक आदर्शों की विरासत को देखते हैं, तो भगवान बुद्ध के विचार हमारे सामने एक रत्न की तरह आते हैं, जिनकी प्रकाश किरणें हमारे मतिभ्रम के अंधेरे को दूर कर सकती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में, समाज पर बौद्ध धर्म के प्रभावों को बताया गया है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रस्तावना

आज पूरी दुनिया में हर जगह हिंसा, उन्माद, निराशा, घृणा और द्वेष की बातें की जाती हैं। इसके कारण न केवल अस्थिरता बढ़ रही है, बल्कि विकास की गति भी धीमी हो रही है। यहां तक कि इंसान भविष्य पर भी सवाल उठा रहे हैं। आज हम भयानक क्षणों में जी रहे हैं और मनुष्य, मनुष्य का दुश्मन बन रहा है।

यदि हम इन चुनौतियों पर ध्यान देते हैं, और इसके निवारण के लिए प्राचीन परंपराओं और विचारों को देखते हैं, तो भगवान बुद्ध के विचार हमारे सामने एक रत्न की तरह दिखाई देते हैं, जिनकी प्रकाश किरणें हमारे भ्रम के अंधेरे को दूर कर सकती हैं। लेखक के विचार में, भगवान बुद्ध की कई प्रथायें, विचार और ज्ञान मानव कल्याण के लिए मील के पत्थर साबित हुए हैं क्योंकि भगवान बुद्ध ने एक गैर – समाजवादी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भगवान बुद्ध ने कहा है कि **घृणा कभी समाप्त नहीं होती है बल्कि केवल प्रेम घृणा को समाप्त कर देता है।**

आज विश्व मंच पर जो घटनाएं हो रही हैं, उन पर हिंसा की सनक हावी है और इससे पैदा होने वाली अशांति, घृणा और विद्वेष के परिणामस्वरूप, न केवल अस्थिरता बढ़ रही है, बल्कि विकास की गति भी धीमी हो रही है, और मनुष्य के भविष्य के बारे में सवाल किया जा रहा है। हम हमेशा सबके सुख की कामना करते हैं, सभी के स्वास्थ्य के लिए, लोगों के कल्याण के लिए, और कोई भी दुखी न हो। पृथ्वी, समाज, पशु, पक्षी, वनस्पति, सभी के लिए शांति, हम वैदिक काल से करते आ रहे हैं, लेकिन आज हम भयानक क्षणों में जी रहे हैं। मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु बन रहा है।

आज मानव अधिकारों की रक्षा, मानवता की रक्षा और मानव पर्यावरण की रक्षा करना कठिन होता जा रहा है। अगर हम इस पर सावधानी से विचार करें, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारी सोच कहीं कम हो गई है, अंतर आ गया है और हम गलत दिशा में जा रहे हैं। सही रास्ता क्या हो सकता है जिससे पूरी मानव जाति का कल्याण हो सके ? यह एक बड़ी चुनौती बन गया है और इसका हल भी खोजना है। अगर हम अपने पारंपरिक विचारों की विरासत को देखें, तो भगवान बुद्ध के विचार हमारे सामने एक रत्न की तरह आते हैं, जिनकी प्रकाश किरणें हमारे मतिभ्रम के अंधेरे को कम कर सकती हैं।

बुद्ध का भारत आगमन –

भारतीय इतिहास में बुद्ध का आगमन एक क्रांतिकारी घटना है। उनका जन्म ईसा पूर्व छठी शताब्दी में हुआ था। 600 ईसा पूर्व से 400 ईसा पूर्व तक की अवधि भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि है। इस अवधि की घटनाओं ने भारत के राजनीतिक और धार्मिक जीवन को नए आयाम दिए। राजनीतिक रूप से, इस अवधि में मजबूत केंद्रीय राजनीतिक शक्ति का अभाव था, और पूरे देश को कई बड़े और छोटे राज्यों में विभाजित किया गया था। शोडास महाजनपद इन राज्यों में प्रसिद्ध हैं। अंग, मगध, काशी, कोसल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, सुरसेन, असाक, अवंती कम्बोज और गंधार, ये सोलह महाजनपद थे। इनमें से कुछ महाजनपदों में, एक राजतंत्रीय व्यवस्था थी और कुछ में, यह लोकतांत्रिक था। राजनैतिक एकता के अभाव में, ये महाजनपद आपस में लड़ते थे और शक्तिशाली महाजनपद, इन राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते थे। इन महाजनपदों के अलावा दस गणराज्य थे। ये कपिला वस्तु के शाक्य, अल्लाकाय बली, केसपुत्र का कलाम, रामग्राम का कोलम, सुशागिरि का भाग, पावा का भल्ला, कुशी नारा का मल्ल, यिप्पिलिवन का मोरिया, मिथिला का विदि और वैशाली का लिच्छवी।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

बौद्ध समाजः

इसके विषय में सामाजिक जानकारी हमें ब्राह्मण साहित्य से मिली। उपनिषदों के बाद, ब्राह्मण साहित्य का एक बड़ा हिस्सा एक सूत्र के रूप में लिखा गया था। बौद्ध धर्म के प्रचार का मुकाबला करने के लिए सूत्र साहित्य का निर्माण किया गया था। सूत्र साहित्य में कल्प सूत्र का विशेष महत्व है। कल्प सूत्र को तीन भागों में बांटा गया है –श्रुत सूत्र, गृह्य सूत्र और धर्म सूत्र। सूत्र साहित्य गद्य और पद्य दोनों में है, जबकि स्मृति साहित्य पद्य में ही है। सूत्र और स्मृति साहित्य को एक साथ शास्त्र कहा जाता है। गौतम धर्मसूत्र सबसे प्राचीन माना जाता है। प्रारंभ में, गौतम, बौधायन, वषिष्ठ और आपस्तम्ब के धर्मसूत्र लिखे गए थे। गौतम और वशिष्ठ उत्तर भारत से हैं जबकि बौधायन और आपस्तम्ब दक्षिण भारत से हैं। कुछ मुद्दों पर इन सूत्रों में भी मतभेद है। उदाहरण के लिए, गौतम और बौधायन आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख करते हैं जबकि आपस्तम्ब सूत्र में केवल छह प्रकार के विवाहों का उल्लेख है। उसी तरह, बौधायन बड़े बेटे को उत्तराधिकार में एक बड़ा अंग दिए जाने की वकालत करते हैं जबकि आपस्तम्ब इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते हैं। इसी तरह, गौतम ब्राह्मण को एक विशिष्ट स्थिति में ब्याज पर पैसा देने का अधिकार देता है, अर्थात यदि यह एक मध्यस्थ के माध्यम से किया जाता है। तब वह ब्राह्मण को कृषि और वाणिज्य में व्यापार करने का अधिकार देता है। दूसरी ओर, बौद्ध धर्म समुद्र – यात्रा की महत्वपूर्ण गतिविधि की निंदा करता है और इसे अधर्म कहता है। वर्ण व्यवस्था का जन्म इसी काल में हुआ था। समाज का द्वन्द्वात्मक ढांचा टूट गया और फार्मूलाबद्ध साहित्य ने जाति के आधार पर समाज पर शासन करने की कोशिश की।

एक ही अपराध के लिए चार वर्णों को अलग – अलग दंड निर्धारित किया गया था। ब्राह्मणों को कम से कम सजा दी जाती थी और शूद्रों को सबसे ज्यादा सजा दी जाती थी। इसी तरह, ब्याज की राशि भी अलग दिखती थी। क्षत्रिय वर्ण की प्रतिष्ठा अब बढ़ गई थी क्योंकि लोहे के औजार अब युद्ध के रूप में इस्तेमाल किए जा रहे थे। उसी तरह, कृषि उपकरण और उत्पादन के विकास के साथ, वैश्य वर्ण की आर्थिक क्षमता भी बढ़ी और बडी गृहिणियां अस्तित्व में आईं।

गौतम ने शूद्र को गैर – आर्यन कहा। सांख्य सूत्र के अनुसार, शूद्र तीन अन्य वर्णों के साथ ओदन और महाव्रत नामक संस्कारों में भी भाग ले सकते थे। जाति का निर्णय पहले जाति द्वारा अनुलोम और विलोम विवाह के आधार पर किया गया था। शुरुआती बौद्ध ग्रंथों में, हीनसेप (निचली जातियों के लिए) शब्द का इस्तेमाल किया गया है। 5 हीन जातियों का उल्लेख है–चांडाल, निषाद, वेना, रथकार, पुक्कस। बुद्ध और महावीर जन्म से जाति के समर्थक नहीं थे, बल्कि कर्म पर आधारित जाति व्यवस्था के पक्षपाती थे।

परिवार :–

परिवार के मुखिया के अधिकारों में वृद्धि हुई। वह अपने बेटे को संपत्ति के अधिकार से वंचित कर सकता था। सूत्र साहित्य में पिता पुत्र को देने या बेचने का संकेत है।

महिलाओं की स्थितिः –

पाणिनि में कुमार शब्द का प्रयोग अविवाहित लड़की के लिए किया गया है। जिस समय वह विवाह के योग्य हो गई, उस समय उसे वरया कहा जाता है। जिस लड़की ने अपनी मर्जी से पति चुना, उसे पतिव्रत कहा जाता था। आमतौर पर, महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई। दहेज प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ। स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन थीं। उत्तराधिकार में भी उनके साथ भेदभाव किया गया। आपस्तम्ब बेटी को पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी मानता है। जब उसके पास कोई

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

अन्य वारिस नहीं होता है। सती प्रथा के साहित्यिक साक्ष्य पहली बार तब प्राप्त हुए हैं जब एक ग्रीक लेखक उत्तर–पश्चिम में इस प्रथा पर चर्चा करता है।

दास प्रणालीः –

इस अवधि के दौरान दास प्रणाली प्रचलित थी। विनय पिटक में तीन प्रकार के दासों की चर्चा की गई है –

1.घर में नौकरानी द्वारा उत्पन्न,

2.युद्ध में बंदी बनाया गया,

3. पैसे से खरीदा गया। चौथे प्रकार के दास (स्वेच्छा से दास बनने) पर दीर्घायु में चर्चा की जाती है।

राजसत्ता का संविदात्मक (समझौता) सिद्धांतः –

यह बौद्ध विचारकों द्वारा प्रतिपादित है और यह महासमैट की अवधारणा पर आधारित है। इसका आधार बौद्ध ग्रन्थ दीर्घ निकया है। इस युग में, राजशाही के अलावा, गणतंत्र थे, हम इन्हें गण या संगा के रूप में जानते हैं। गणतंत्र में वास्तविक शक्ति इकाइयाँ कुलीनतंत्र में निहित थी। शाक्य और लिच्छवी गणराज्यों में शासक वर्ग एक ही गोत्र और एक ही वर्ण के थे। वैशाली के लिच्छवियों की सभा में 7707 सदस्य थे जिन्हें राजा कहा जाता था। लेकिन ब्राह्मण इसमें शामिल नहीं थे। उदाहरण के लिए, मौर्योत्तर काल में, ब्राह्मणों और क्षत्रियों के पास मालव और क्षुद्रों के गणतंत्र में नागरिकता थी, लेकिन दास और शूद्र नहीं। पंजाब में ब्यास नदी के आसपास एक गणतंत्र था, जिसके सभागार में ऐसे सदस्य हो सकते थे जो कम से कम एक हाथी दे सकें।

शाक्य और लिच्छवियों का प्रशासन सरल था, इसमें राजा, सेनापति और भांडागारिक (कोषाध्यक्ष) शामिल थे। ग्रीक लेखकों के अनुसार, ए.पी. पाताल में एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था थी, राज्य की। इसमें, दो वंशानुगत राजाओं ने शांति के साथ शासन किया, शासन वृद्ध लोगों की एक परिषद द्वारा शासित था। इसी तरह, सुभूति और अंबष्ठ गणराज्य में, राज्य ने बच्चों की परवरिश का जिम्मा संभाला ताकि बच्चे स्वस्थ पैदा हो सकें। मुशिक वंश एक ऐसा राज्य था जहाँ दास नहीं पाए जाते थे।

समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभावः –

यह काल धार्मिक दृष्टि से भारत के दो प्रभावशाली धर्मों के उदय का युग है। ये धर्म जैन और बौद्ध धर्म हैं। ये दोनों धर्म पारंपरिक वैदिक धर्म की मान्यताओं एवं कर्मकांड आदि के खिलाफ थे। जैन धर्म के प्रणेता ऋषभदेव थे जो पहले तीर्थंकर थे।

जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हैं जिन्होंने जैन धर्म का प्रचार किया। बौद्ध धर्म के प्रणेता महान गौतम बुद्ध थे, जिनके व्यक्तित्व और कार्य का न केवल भारतीयों पर प्रभाव पड़ा, बल्कि वे भारत के बाहर भी व्यापक रूप से फैले। आज भी भारत के बाहर कई देशों जैसे चीन, तिब्बत, कोरिया, श्रीलंका, जापान आदि में इस महान व्यक्तित्व के समर्थकों और अनुयायियों की एक बड़ी आबादी है, आज भी भारत में, जन्म और जीवन से जुड़े कई पवित्र स्थान हैं। गौतम बुद्ध को भारतीयों और भक्तों के लिए पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता है। भिक्षुओं ने सदियों तक बुद्ध की शिक्षाओं को संरक्षित किया और अपने पूरे जीवन को इसके प्रचार में समर्पित कर दिया ताकि पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों को आत्मज्ञान प्राप्त

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

करने का सही रास्ता दिखाया जा सके। यह ज्ञान की परंपरा में एक क्रांतिकारी घटना थी, जिसने मानव समाज के सामने जीवन की एक नई शैली प्रस्तुत की। बौद्ध विचार के प्रति समर्पित शिष्यों में अग्रिका धर्मपाल नाम का एक शिष्य भी था। श्रीलंका के इस बेटे ने 1891 में भारत में महाबोधि सोसाइटी नामक एक संस्था की स्थापना की और बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित किया।

ज्ञान का संशोधनः –

दो हजार पांच सौ साल पहले, महात्मा बुद्ध ने पांच ब्राह्मण तपस्वियों और बनारस के श्रेष्ठ पुरुषों को धम्म (धर्म) का उपदेश दिया था। जब वे दीक्षा प्राप्त करने के बाद शिष्य बने, तो बुद्ध ने उन्हें भारत के विभिन्न राज्यों में इस धर्म के उपदेश को प्रचारित करने के लिए भेजा। जाओ और अच्छे आचरण की इस खुशखबरी का ऐलान करो, जो शुरू में तो मीठी है, बीच में भी मीठी है और अंत में भी। इस धर्म को देवताओं और पुरुषों के करुणा के सुख और कल्याण के लिए प्रचारित करो। महात्मा बुद्ध की उपरोक्त शिक्षाएँ सभी कल्याण से परिपूर्ण हैं और मानवता की सीट तैयार करती हैं।

ज्ञान का प्रसार : –

अच्छे आचरण (धर्मनिष्ठा) पर विशेष जोर देते हुए, बुद्ध ने अपने तपस्वी शिष्यों से कहा कि वे दस नियमों का सख्ती से पालन करें– न हत्या करना, न चोरी करना, न मादक द्रव्यों को पीना, दोपहर को भोजन न करना, मनोरंजन के साधनों से बचना, सौंदर्य वृद्धि के लिए माला, इत्र, प्रसाधन आदि के उपयोग से दूर रहने के लिए, अधिक मूल्यवान आसनों, बिस्तरों आदि का उपयोग न करने के लिए और न ही चांदी और सोने का उपयोग करने के लिए।

बौद्ध धर्म के प्रारंभिक काल में, बुद्ध शिष्यों के लिए अग्रणी थे, लेकिन बाद में वे बौद्ध धर्म में एक मुक्तिदाता बन गए। उनकी प्रसिद्धि फैल गई और उन्हें मनुष्यों के उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया गया, अर्थात उनकी कृपा से निर्वाण प्राप्त होगा। बुद्ध जगह–जगह लोगों से मिलते, उन्हें बौद्ध धर्म सिखाते और उन्हें अपना अनुयायी बनाते। उन्हें धर्म के पक्ष में जनमत तैयार करने में भी अपार सफलता मिली। उन्होंने 45 वर्षों तक लगातार इस धर्म का प्रचार करना जारी रखा और आखिरकार 80 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु मालो गणराज्य की राजधानी कुसीनारा में हुई।

बौद्ध धर्म द्वारा प्रस्तुत जीवन दृष्टिः –

अपने अहिंसक अनुयायियों को बुद्ध भगवान की सलाह है कि घृणा कभी भी घृणा करना नहीं छोड़ती, लेकिन केवल प्रेम को मिटा देती है। आधुनिक बमों का एकमात्र उत्तर दयालुता है। ये देश मानवाधिकारों के लिए मील का पत्थर साबित हो सकते हैं।

अगर कोई पढ़ना–लिखना सीखना चाहता है, तो उसे स्कूल में दाखिला लेना होगा। इसी तरह, शरीर को स्वस्थ और मजबूत रखने के लिए, जिम जाना पड़ता है। योग और प्राणायाम सीखने के लिए किसी योग विद्यालय जाना पड़ता है। इसी प्रकार, विपश्यना की तकनीक को सीखने के लिए विपश्यना योगाध्याय केंद्र में जाना होगा। जो बुद्ध की शिक्षाओं का सार है।

विपश्यनाः– मानव कल्याण के लिए प्रशस्त मार्ग। यदि ध्यान का उद्देश्य केवल मन को एकाग्र करना है, तो व्यक्ति को योग ध्यान की तकनीक सीखनी चाहिए, जिसके लिए वह गुरु से ध्यान एकाग्रता का मंत्र या भाव प्राप्त करता है। इसका अभ्यास घर पर भी किया जा सकता है। इस तकनीक से, माइंड फुलनेस प्राप्त होगी, मन की एकाग्रता प्राप्त होगी और यहां तक

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

कि मन की सलाह भी शुद्ध होगी। लेकिन विपश्यना के साथ, न केवल मन की सतह को साफ किया जाता है, बल्कि यह एक तरह से सर्जरी की तरह मन का गहन मंथन है। यह अपनी अंतरात्मा को भेदकर मन को शुद्ध करता है, क्योंकि वही स्थान जहां से कलुष आता है उसे शुद्ध करना आवश्यक है। असंख्य जन्मों– जन्मों से मन की गहराइयों में ये दुख भरी भावनाएँ जमा होती हैं। ये उदास भावनाएं इस जीवन के दौरान जमा होती हैं। मन की गहराई में, अर्थात मन के भीतर की उदासीन भावनाओं के इस तरह के उद्भव के परिणामस्वरूप दास बन जाता है। यह वास्तव में एक महान बंधन है। यही कारण है कि एक व्यक्ति को कणों के इस बंधन से मुक्त होना है और उदास भावनाओं के जन्म के बाद जन्म के समय में बढ़ते पैटर्न को बदलना है। इसलिए, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मन को बहुत अच्छी तरह से शुद्ध करना आवश्यक है। जिस तरह एक बीमारी को दूर करने के लिए सर्जरी की आवश्यकता होती है।

यह किसी भी तरह के दूषित वातावरण से मुक्त स्थिति में ठीक से सीखा जा सकता है। इसके लिए इसे न केवल पर्यावरण या वायुमंडलीय दूषित वातावरण से अलग किया जाना चाहिए, बल्कि कण पदार्थ के परिणामस्वरूप उत्पन्न दूषित वातावरण से भी बचना चाहिए।

नैतिक जीवन जीने और सभी को मानवीय सम्मान देने से ही विपश्यना की तकनीक सीख सकते हैं। मन पर नियंत्रण रखकर नैतिक जीवन जिया जा सकता है। मन को जीतने और मन को शुद्ध करने के लिए, जीवन को नैतिकता पर आधारित होना चाहिए। मनुष्य को कोई भी मुखर या शारीरिक गतिविधि नहीं करनी चाहिए, जो दूसरों की शांति को भंग करे और उनके सुख में बाधा डाले। भीतर से किसी कार्य को करने के लिए, व्यक्ति को एक स्थिति की आवश्यकता होती है, जिसके तहत भले ही पुरुषवादी भावनाओं का वेग बढ़ जाता है, पर वह थरथराने वाला नहीं है, उसे भावनाओं को बढ़ाने में सक्षम नहीं होना चाहिए और कलुष का ज्वार भी नहीं होना चाहिए। विपश्यना की स्थिति में, व्यक्ति पल–पल अपने बारे में सच्चाई देखता है।

निष्कर्ष:

बुद्ध, जिन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त किया है, भारत की समग्र सोच का ऐसा प्रतीक है, जिसकी छवि अभी भी बरकरार है। आज के जटिल समय में जहां प्रतिस्पर्धा, हिंसा, अपराध और लालच सिर उठा रहे हैं, बुद्ध के शब्द हमें मानवाधिकारों की रक्षा में श्रेयस्कर मार्ग के सबसे आगे लाते हैं। केवल शांति, सहयोग और सद्भाव की त्रिवेणी मानवता की पीड़ा को दूर कर सकती है।

बुद्ध के शब्दों को मानवाधिकारों के प्रति समर्पित होने से बेहतर कोई विचार नहीं है, क्योंकि वे वैज्ञानिक और धर्मनिरपेक्ष हैं। हम आशा करते हैं कि बुद्ध के इन संदेशों से पूरित जीवन शैली मानवता के भविष्य को सुरक्षित करेगी और इसमें जीवन की संभावना निहित है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. गुप्त, नत्थ ूलाल (1979) : विदर्भ का सांस्कृतिक इतिहास, विष्व–भारती पब्लिकेषन, नागपुर।
2. जोहरी, पी0डी0 एवं पाठक, पी0डी0 (1973) : भारतीय षिक्षा की समस्याऐं, विनोद पुस्तक मंदिर,
3. झा, दिजेन्द्र नारायण, श्री मालीकृष्ण मोहन (2001) : प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विष्वविद्यालय।
4. झा और मिश्र (1968) : आचार षास्त्र के मूल सिद्धान्त, इंडियन प्रेस प्राईवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
5. टी0 डब्ल्यू0 रिजडेविडस (1950) : बुद्विष्ट इंडिया कलकत्ता।
6. डॉ0 बसु, दुर्गादास (1998) : भारत का संविधान, प्रेन्टिसहाल ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली।
7. डॉ0 बसु, दुर्गादास (1998) : 42वें संविधान संषोधन से स्वीकृत, एवं परिचय–प्रन्टिस हॉल ऑफ इंडिया, लिमिटेड, नई दिल्ली।
8. डॉ0 सुरज, नरेन (1994) : बुद्विष्ट सोषल एण्ड मोरेल एजुकेषन,प्राइमल पब्लिकेषन,
9. डॉ0 राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1970) : गौतम बुद्व और जीवन दर्षन, चतुर्थ संस्करण, राजपाल एण्ड संस, कषमीरी गेट दिल्ली।
10. डॉ0 राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1969) : भारतीय दर्षन, प्रथम संस्करण, राजपाल एण्ड सन्स, कषमीरी गेट, दिल्ली।
11. डॉ0 षर्मा, गोपीनाथ (1969) : भारत का सम्पूर्ण इतिहास, द्वितीय संस्करण, षिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।
12. डॉ0 षर्मा, डी. एल. (2005) : षिक्षा तथा भारतीय समाज, नवम संस्करण, सूर्या पब्लिकेषन,
13. डॉ0 पाण्डे, विमलचन्द्र (1985) : महापरिनिर्वाण, सूत्र दीर्घ 203 (प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास), सेन्ट्रल पब्लिषिंग हाउस,
14. डॉ0 श्रीवास्तव, के0 सी0 : प्राचीन भारत का (दषम संस्करण–2005) इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद,
15. डॉ0 पाल, हंसराज (1998) : पाठयचर्या आधार एवं सिद्वान्त, स्कालर्स पब्लिषिंग हाउस, इन्दौर।
16. डॉ0 चौबे, सरयु प्रसाद (1983) : हमारी षिक्षा समस्याए, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा,
17. तिवारी, गोपालदास एवं कमलाकर (1966) : प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास, द्वितीय संस्करण, इतिहास प्रकाषन,संस्थान– इलाहाबाद।
18. देव, नरेन्द्र आचार्य (2013) : विक्रम संवत, बुद्व धर्म दर्षन, बिहार राष्ट्रभाषा, परिषद्, पटना।
19. दासगुप्ता, एस0 (1961) : डवलपमेन्ट ऑफ मारेल फिलासफी आफ इण्डिया, एस नगीन एण्ड सन्स, जालंधर।
20. दिनकर, रामधारी सिंह (1956) : संस्कृति के चार अध्याय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
21. देवराज, एन0 के0 (1979) : भारतीय संस्कृति, उत्तरप्रदेष हिन्दी संस्थान (हिन्दी समिति प्रभाग, लखनऊ)
22. धर्मरक्षित, भिक्षु (1981) : सारनाथ का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
23. पाठक, रमेष प्रसाद (2015) : उदीयमान आधुनिक भारतीय समाज में षिक्षा, विकास पब्लिकेषंस,
24. पाण्डे, गोविन्द्र चन्द (1963) : बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, हिन्दी समिति, लखनऊ पब्लिकेषन्स
25. प्रो0 सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद (1993) : पंचम संषोधित संस्करण, भारतीय दर्षन की रूपरेखा, मोतीलाल, बनारसीदास पब्लिकेषन,
26. प्रो0 पारिक, मथुरेष्वर : उदीयमान और भारतीय समाज और षिक्षण, जयपुर प्रकाषन।
27. पणिक्कर, के0 एम0 (1956) : ए सर्वे ऑफ इंडियन हिस्ट्री, एषिया पब्लिषिंग हाउस, बम्बई।
28. बाषम, एम0 एल0 (1996) : अद्भूत भारत, हिन्दी संस्करण, अनुवादक वेकटेंष चन्द्र पाण्डेय, षिवलाल अग्रवाल एण्ड क0, आगरा
29. बाजपेयी, कृष्ण दत्त (1980) : भारत के सांस्कृतिक केन्द्र, द मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली।

International Journal of
Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

30. बापट, पी0 वी0 (1956) : बौद्व धर्म के पच्चीस सौ वर्ष, भारत सरकार पब्लिकेषनस् डिवीजन, दिल्ली।
31. बौधानन्द, भदन्त (1960) : भगवान गौत्तम बौद्व, बुद्व विहार, रिसालदार पार्क, लखनऊ प्रकाषन।
32. भट्टाचार्य, सच्चिदानन्द (1989) : भारतीय इतिहास कोष, उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
33. मिश्र, उमेष (1970) : भारतीय दर्षन, हिन्दी साहित्य समिति, सूचना विभाग, लखनऊ।
34. मिश्र, जयषंकर (1983) : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास ,बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
35. मूले, गुणाकर (1973) : भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, ओरियन्ट लॉगमैन लिमिटेड, नई दिल्ली।
36. रस्क, आर, आर (1982) : षिक्षा के दार्षनिक आधार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
37. रामचन्दानी, इन्दु : भारत ज्ञानकोष, खण्ड–4, भारतकोष पुस्तकालय, प्रकाषन–1 साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, प्राईवेट लि0, नई दिल्ली।
38. लाल, अंगेन (1967) : बौद्व साहित्य मे भारतीय जीवन, (प्रथम षताब्दी से तृतीय षताब्दी तक), कैलाष प्रकाषन, लखनऊ
39. लाल, युमना (1993) : भारत एवं विष्व मे बौद्व प्रसारक, प्रतिभा प्रकाषक, दिल्ली।
40. लामा, तारानाथ (1971) : भारत मे बौद्व धर्म का इतिहास, काषीप्रसाद जायसवाल षोध संस्थान, पटना।